उच्च शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित
द्विदिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी की आख्या

विषय: वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता

संगोष्ठी तिथि: 05 एवं 06 मार्च 2017

संगोष्ठी स्थल: स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं शोध अध्ययन केन्द्र] दयानन्द वैदिक (स्नातकोत्तर) कालेज] उरई] जनपद-जालौन (उ0प्र0)

आयोजन सचिव: डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय] प्राचार्य] दयानन्द वैदिक (स्नातकोत्तर) कालेज] उरई

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग एवं शोध अध्ययन केन्द्र] दयानन्द वैदिक (स्नातकोत्तर) कालेज] उरई के तत्वावधान में उच्च शिक्षा विभाग] उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रायोजित द्विदिवसीय राष्ट्रीय हिन्दी शोध संगोष्ठी "वर्तमान वैश्विक परिवेश में भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता" विषय पर दिनांक 05] 06 मार्च 2017 को दयानन्द वैदिक महाविद्यालय] उरई (जालौन) के केन्द्रीय पुस्तकालय के सभागार में सम्पन्न हुयी। इस राष्ट्aीय हिन्दी शोध संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे शिक्षा जगत और समाज के प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों] साहित्यकारों ने सक्रिय सहभागिता कर इक्कीसवीं सदी के द्वितीय दशक में भारतीय संस्कृति के स्वरूप] क्षरण और उन्नयन के विभिन्न पहलुओं पर अपने मन्तव्य व्यक्त किये और साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों से आये विद्वानों द्वारा शोध पत्र वाचन किया गया। इस संगोष्ठी में लगभग सवा सौ लोगों की प्रतिभागिता हुई। यह संगोष्ठी उद्घाटन] समापन और सांस्कृतिक संध्या के अतिरिक्त चार तकनीकी सत्रों में सम्पन्न हुई। प्रत्येक सत्र में शोध पत्र वाचन और शोध पत्र वाचक से श्रोताओं और विद्वत जनों द्वारा व्यापक प्रश्नोत्तर प्रक्रिया एवं परिचर्चा सम्पन्न हुई। इस संगोष्ठी में प्राप्त महत्वपूर्ण तत्व उल्लेखनीय एवं विचारणीय है कि भारतीय संस्कृति विश्व की अनेक प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है और शताब्दियों के अनेक झंझावातों को झेलने के बाद भी अपने मौलिक स्वरूप को न केवल बचाने में समर्थ रही है अपितु भारतीय तो भारतीय समस्त विश्व के जनमानस को व्यापक स्तर पर प्रभावित करने में सफल रही है। भारतीय संस्कृति आम जन को अपने कठिन समय में उचित दिशा निर्देश प्रेषित करने में हमेशा सफल रही है। मानवता] विश्व बन्धुत्व और वसुधैव कटुम्बकम की सोच विश्व को भारत की देन अर्थात् मनुष्य के आदर्श गुणों की व्याख्या ही भारतीय संस्कृति का मूल स्वर है। संस्कार और परम्परा की सम्मिलित धारा का नाम संस्कृति है। भारतीय संस्कृति में सभी जातियों और धर्मों के बीच समन्वय करने की विराट चेतना है।

संगोष्ठी के उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त चार तकनीकी सत्रों में विस्तारित किया गया ताकि संगोष्ठी में उपस्थित सभी वक्ताओं के प्रपत्र] विचार एवं महत्वपूर्ण सुझाव परस्पर रखने का समय मिल सके। शोध प्रस्तुतीकरण के साथ-साथ एक सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया जो कि संगोष्ठी की सार्थकता को सिद्ध करने में सहायक रही। आयोजन समिति तथा समस्त कार्य समितियों ने बहुत ही सराहनीय और संगठित रूप से कुशल संयोजन के साथ कार्य किया। और इस राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी को सफल बनाने में अपना अभूतपूर्व सहयोग प्रदान किया।

दिनांक 05.03.2017 को प्रातः 10:00 बजे दयानन्द वैदिक कालेज] उरई के तत्वाधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय हिन्दी शोध संगोष्ठी का शुभारम्भ महाविद्यालय के केन्द्रीय पुस्तकालय सभागार में हुआ। सर्वप्रथम सभी अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर सरस्वती वन्दना की गई। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय] झाँसी के माननीय कुलपति महोदय प्रो0 सुरेन्द्र दुबे एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो0 जय प्रकाश (चंडीगढ़)] प्रो0 सूर्यप्रसाद दीक्षित (लखनऊ)] डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय (आजमगढ़)] डॉ0 रामसुधार सिंह (वाराणसी)] डॉ0 मुन्ना तिवारी (झाँसी)] प्रो0 पवन अग्रवाल (लखनऊ) एवं महाविद्यालय के प्रबन्धकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार तथा संगोष्ठी संरक्षक के रूप में महाविद्यालय के वरिष्ठतम प्राध्यापक डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव और आयोजन सचिव के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय मंच पर उपस्थित रहे। मंच पर आसीन सभी अतिथियों को महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी ने बैज लगाकर सम्मानित किया। तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 सुरेन्द्र सिंह चौहान] डॉ0 परमात्मा शरण गुप्ता] डॉ0 मंजू जौहरी] डॉ0

विजय यादव] डॉ0 अतुल प्रकाश बुधौलिया] डॉ0 राजेश पालीवाल एवं पुस्तकालय प्रभारी डॉ0 हृदयकान्त श्रीवास्तव द्वारा सभी अतिथियों को बुके देकर स्वागत किया गया। अतिथियों के स्वागत में महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। तदोपरान्त सभी अतिथियों द्वारा राष्ट्रगीत एवं वन्देमातरम् गाकर कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। सर्वप्रथम संगोष्ठी में मंचस्थ और सभी आगंतुकों का महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय ने हार्दिक स्वागत किया। प्रथम वक्ता के रूप में मंच पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित डॉ0 मुन्ना तिवारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि संस्कृति और सभ्यता दोनांे को एक साथ देखने की परम्परा चली आ रही है] जबकि सभ्यता और संस्कृति अलग-अलग है। विनोवा भावे का कथन संस्कृति जीवन की खेती है] कैसे हमारी संस्कृति का क्षरण शुरू हुआ एवं विलियम जोन्स की कहानी के माध्यम से संस्कृति से परिचित कराया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित माननीय कुलपति महोदय ने कहा कि अज्ञेय का कथन जिसमें हम रहते हैं वह सभ्यता है और जो मुझ में रहती है वह संस्कृति है। उन्होंने आगे कहा कि अपने सुसंस्कारित कृत्य जिसको हम संस्कृति कहते है] ही हमारे समाज और देश का परिचायक होते हैं। कार्यक्रम के अन्त में महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री] डॉ0 देवेन्द्र कुमार जी एवं प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय जी ने माननीय कुलपति जी को स्मृति चिन्ह भंेट किया। इसी क्रम में महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 सुरेन्द्र सिंह चौहान जी ने विशिष्ट अतिथि डॉ0 मुन्ना तिवारी जी को स्मृति भेंट प्रस्तुत की। संगोष्ठी संरक्षक डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव जी ने कार्यक्रम में उपस्थित समस्त अतिथियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन किया। अन्त में सभी के द्वारा राष्ट्रगान कर संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का समापन किया। उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ0 (श्रीमती) नीलम मुकेश द्वारा किया गया।

प्रथम तकनीकी सत्र का प्रारम्भ दोपहर 12:15 बजे हुआ जिसका संचालन डॉ0 नीलम मुकेश द्वारा ही किया गया। मंच पर अध्यक्ष के रूप में प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित] मुख्य अतिथि के रूप में प्रो0 जयप्रकाश] मुख्य वक्ता के रूप में डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय] विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 राम सुधार सिंह] रिपोर्टियर के रूप में डॉ0 बृजेश पाण्डेय एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय उपस्थित रहे। मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी] डॉ0 शरत् श्रीवास्तव] श्री सुरेन्द्र यादव] डॉ0 मनोज कुमार गुप्ता] डॉ0 मनोज कुमार श्रीवास्तव जी ने बुके देकर किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित जी द्वारा जीवन सत्वित आनन्द है के माध्यम से अपने विचार प्रस्तुत किये। भौतिकता और अध्यात्म] आस्था के क्षेत्र] पुनर्जन्म] लोक-परलोक आदि के माध्यम से संस्कृति पर अपने विचार प्रस्तुत किए। सत्र के मुख्य अतिथि डॉ0 जय प्रकाश ने कहा कि सास्कृतिक संस्कारों में ढलना ही संस्कृति है] संस्कृति लगातार आगे बढ़ती चली जाती है] खण्डित नहीं होती है] खण्डित द्वीप होते हैं। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय जी ने भी संस्कृति पर अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य द्वारा प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित जी को स्मृति भेंट प्रस्तुत की गई। अन्त के सत्र के रिपोर्टियर डॉ0 बृजेश कुमार पाण्डेय द्वारा सत्र में उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद व्यक्त किया। प्रथम तकनीकी सत्र के समापन पर सभी आगंतुकों को दोपहर भोजन के लिए आमंत्रित किया गया।

द्वितीय तकनीकी सत्र का आरम्भ दोपहर 02:30 बजे महाविद्यालय के बगिया परिसर स्थित सेमिनार हॉल में किया गया। जिसका संचालन महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 आनन्द कुमार खरे जी ने किया। मंच पर अध्यक्ष के रूप में प्रो0 पवन अग्रवाल जी] मुख्य अतिथि के रूप में डॉ (श्रीमती) नीलम मुकेश जी] मुख्य वक्ता डॉ0 पुनीत बिसारिया (झाँसी)] विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 प्रणव शर्मा (पीलीभीत)] डॉ0 मुकेश चन्द्र गुप्ता (मुरादाबाद)] डॉ0 शिव कुमार शर्मा (ग्वालियर)] रिपोर्टियर के रूप में डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव (बस्ती) एवं महाविद्यालय के प्राचार्य उपस्थित रहे। द्वितीय तकनीकी सत्र का प्रारम्भ माँ सरस्वती की वन्दना एवं दीप प्रज्ज्वलन कर किया गया। सभी अतिथियों को प्राचार्य] डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय जी] महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 राजेश पालीवाल] श्री योगेश पाल] डॉ0 मलिखान सिंह] श्री सुरेश चन्द्र] महाविद्यालय के कार्यालय अधीक्षक श्री अनन्त कुमार खरे] लेखाकर श्री जितेन्द्र कुमार जी द्वारा बुके भेंट कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात शोधपत्र वाचन प्रस्तुत किया गया। महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 तारेश भाटिया जी ने अध्यक्ष डॉ0 दुर्गा प्रसाद श्रीवास्तव जी को स्मृति भेंट प्रस्तुत किया। साथ ही मुख्य अतिथि प्रो0 पवन अग्रवाल जी को डॉ0 गिरीश श्रीवास्तव ने] मुख्य वक्ता डॉ0 पुनीत बिसारिया जी को डॉ0 मलिखान सिंह ने] विशिष्ट अतिथि डॉ0 प्रणव शर्मा जी को श्री अनन्त कुमार खरे जी ने] डॉ0 मुकेश चन्द्र गुप्ता जी को श्री योगेश पाल जी ने] विशिष्ट अतिथि डॉ0 शिव कुमार जी को श्री जितेन्द्र कुमार ने एवं रिपोर्टियर डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव जी को श्री सुरेश

यादव ने स्मृति भेंट कर सम्मानित किया। सत्र के अन्त में रिपोर्टियर डॉ0 बलजीत श्रीवास्तव जी ने सभी अतिथियों को धन्यवाद प्रगट किया। द्वितीय तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात चाय अंतराल हुआ।

दिन भर के बौद्धिक विमर्श के उपरान्त संध्याकाल में महाविद्यालय के प्राध्यापकों और बच्चों के सम्मिलित प्रयास से एक "सांस्कृतिक संध्या" का आयोजन किया गया जिसका संचालन डॉ0 अलका रानी पुरवार ने किया। कार्यक्रम में शास्त्रीय गायन] भजन] उपशास्त्रीय गायन] बुन्देली लोकगीत] पाश्चात्य गीत] देशभक्ति गीत] बुन्देली तकरार गीत] पैरोडी] कव्वाली] गजल] शास्त्रीय नृत्य] सूफी गीत] आल्हा] सामूहिक बुन्देली नृत्य तथा समूह गान महाविद्यालय की छात्र/छात्राओं द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापकगण एवं समस्त शिक्षणेत्तर कर्मचारी उपस्थित रहे।

अगले दिन दिनांक 06.03.2017 को प्रातः 10:00 बजे तृतीय सत्र महाविद्यालय के बगिया परिसर स्थित सेमिनार हॉल में दो दिवसीय राष्ट्रीय हिन्दी शोध संगोष्ठी का शुभारम्भ सभी अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर सरस्वती वन्दना के साथ हुआ। तत्पश्चात कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के बी0एड0 विभाग की प्रभारी डॉ0 (श्रीमती) शैलजा गुप्ता द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता चंड़ीगढ से आये प्रो0 जयप्रकाश जी ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ0 राम सुधार सिंह जी] विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 टी0 आर0 निरंजन] रिपोर्टियर के रूप में डॉ0 रामप्रताप सिंह एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय उपस्थित रहे। मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी] डॉ0 नीलरतन] श्री अनन्त कुमार खरे] श्री विजय कुमार चौधरी] श्री अखिलेश कुमार एवं डॉ0 आराम सिंह जी ने बुके भेंट कर किया। सभी अतिथियों के स्वागत के पश्चात शोध पत्र वाचन हुआ। डॉ0 जय प्रकाश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि देश का इतिहास जितना पुराना है उतनी ही देश की संस्कृति भी पुरानी है] के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किये। मुख्य अतिथि डॉ0 राम सुधार सिंह द्वारा किसी राष्ट्र के विकास का अन्दाज उसकी आगे आने वाली पीढ़ी कितनी सुन्दर और सुसभ्य है] इस विचार पर उन्होने अपने भाव प्रगट किये। महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ0 (श्रीमती) नीलम मुकेश जी ने कहा कि आज संगोष्ठी के माध्यम से भारतीय संस्कृति पर जो चर्चा हुई है उससे हम सब स्रोताओं और खासतौर पर नई पीढ़ी की संस्कृति के प्रति विश्वास एवं अवधारणा और मजबूत हुई है। तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय] प्राध्यापक डॉ0 तारेश भाटिया] डॉ0 नीरज द्विवेदी एवं डॉ0 परमात्मा शरण ने सभी अतिथियों को स्मृति भेंट कर उनको सम्मानित किया। सत्र के अन्त में सत्र के रिपोर्टियर डॉ0 रामप्रताप जी ने सत्र में उपस्थित सभी सम्मानित अतिथियों का आभार एवं धन्यवाद प्रगट किया। तृतीय तकनीकी सत्र के समापन सभी अतिथियों और आगंतुकों के लिए चाय आदि का प्रबंध किया गया।

चतुर्थ तकनीकी सत्र भी महाविद्यालय के बगिया परिसर के सेमिनार हॉल में ही आयोजित हुआ जिसका संचालन महाविद्यालय के अंग्रेजी विभाग प्रभारी डॉ0 अलकारानी पुरवार जी ने किया। मंच पर अध्यक्ष के रूप में डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय जी] मुख्य अतिथि के रूप में ओम प्रकाश सिंह जी] मुख्य वक्ता डॉ0 किरण शर्मा] विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ0 तारेश भाटिया] रिपोर्टियर के रूप में डॉ0 जयशंकर तिवारी जी एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय जी उपस्थित रहे। सभी अतिथियों को प्राचार्य] डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय जी] महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 राजेश पालीवाल] डॉ0 अतुल प्रकाश बुधौलिया] डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी एवं डा0 हर्ष गर्ग द्वारा बुके भेंट कर सम्मानित किया गया। तत्पश्चात शोधपत्र वाचन प्रस्तुत किया गया। इसके बाद मुख्य अतिथि डॉ0 ओम प्रकाश सिंह जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि शिक्षा का विस्तार तो हुआ लेकिन मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण नहीं हुआ जो हमारी संस्कृति का मूल आश्रय है। महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 तारेश भाटिया जी ने वसुधैव कुटुम्बकम के आधार पर संस्कृति पर अपनी व्याख्यानमाला प्रस्तुत की। सत्र की मुख्य वक्ता डॉ0 किरण शर्मा द्वारा भी संस्कृति के विषय पर अपनी व्याख्या प्रस्तुत की। अध्यक्ष डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय जी] मुख्य अतिथि ओम प्रकाश सिंह एवं मुख्य वक्ता डॉ0 किरण शर्मा को क्रमशः डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय] डॉ0 परमात्मा शरण गुप्ता एवं प्राचार्य जी द्वारा स्मृति भेंट प्रस्तुत किया गया। सत्र के अन्त में रिपोर्टियर डॉ0 जयशंकर तिवारी जी ने सभी अतिथियों को धन्यवाद प्रगट किया। चतुर्थ तकनीकी सत्र के समापन के पश्चात दोपहर भोजन अंतराल हुआ।

संगोष्ठी का समापन–सत्र पुस्तकालय सभागार में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ सभी अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन कर महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना के साथ दोपहर 02:30 पर प्रारम्भ हुआ। डॉ0 (श्रीमती) नीलम मुकेश जी ने

कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नागपुर से आये राष्ट्रवादी विचारधारा के मुखर प्रवक्ता श्री मुकुल कानिटकर जी मंच की शोभा बढ़ा रहे थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय] दिल्ली के डॉ0 रंजन कुमार त्रिपाठी] डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय जी (आजमगढ़)] डॉ0 राम सुधार सिंह (वाराणसी) एवं महाविद्यालय के प्रबन्धकारिणी कमेटी के अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार तथा संगोष्ठी संरक्षक के रूप में महाविद्यालय के वरिष्ठतम प्राध्यापक डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव और आयोजन सचिव के रूप में महाविद्यालय के प्राचार्य मंच पर उपस्थित रहे। मंच पर आसीन सभी अतिथियों को महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 नीरज कुमार द्विवेदी ने बैज लगाकर सम्मानित किया तत्पश्चात पुस्तकालय प्रभारी डॉ0 हृदयकान्त श्रीवास्तव] महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 रामप्रमाप सिंह] डॉ0 परमात्मा शरण गुप्ता] डॉ0 आनन्द कुमार खरे] डॉ0 राजेश पालीवाल] डॉ0 तारेश भाटिया] डॉ0 अतुल प्रकाश बुधौलिया एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय द्वारा सभी अतिथियों को बुके भेंट कर उनका स्वागत किया। महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा एक स्वागत गीत द्वारा सभी माननीय अतिथियों का स्वागत किया गया। स्वागत गीत के पश्चात सभी अतिथियों द्वारा राष्ट्रगीत और वन्देमातरम् गाकर कार्यक्रम का सुआरम्भ किया। महाविद्यालय में संगोष्ठी में उपस्थित होने के लिए महाविद्यालय के वरिष्ठतम् प्राध्यापक एवं संगोष्ठी संरक्षक डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव जी ने हृदय से उनका स्वागत उद्बोधन कर धन्यवाद प्रगट किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित डा0 रंजन कुमार त्रिपाठी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि संस्कृति स्वभाव से हमारे अंतःकरण में कैसे विराजमान होती है एवं सोलह संस्कार संस्कृति के वाहक के रूप में हमारे साथ जन्मतः जुड़ जाता है। विशिष्ट अतिथि के रूप में नागपुर से पधारे श्री मुकुल कानिटकर जी ने भारतीय संस्कृति ही विश्व समुदाय को संकट के उपाय से बचा सकती है] प्रदर्शन बदल गया लेकिन दर्शन आज भी नहीं बदला] यह हमारी भारतीय संस्कृति है इन विचारों के माध्यम से उद्बोधन प्रस्तुत किया। तत्पश्चात महाविद्यालय के अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार जी ने भी महाविद्यालय के प्राचार्य एवं समस्त शिक्षक/शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का उत्साहवर्द्धन किया। डॉ0 रामसुधार जी ने संगोष्ठी में लिये अपने स्मरणीय अनुभव को व्यक्त कर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ0 मुकुल कानिटकर जी ने महाविद्यालय के प्राचार्य जी को धन्यवाद प्रकट किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्रबन्धकारिणी कमेटी के उपाध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार जी ने भी सभी को अपना आशीर्वचन प्रदान किया और महाविद्यालय के प्राचार्य से अपेक्षा की इस संगोष्ठी की तरह ही महाविद्यालय में आगे भी कार्यक्रम आयोजित होते रहे। तत्पश्चात महाविद्यालय के प्राचार्य और आयोजन सचिव पद के दायित्व का निर्वहन करते हुए डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय जी ने दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में उपस्थित सभी सम्मानीय अतिथि एवं संगोष्ठी को सफल बनाने में लगे महाविद्यालय के शिक्षक/शिक्षणेत्तर कर्मचारियों का धन्यवाद प्रगट कर सम्पूर्ण संगोष्ठी को अपनी यादों में पिरो दिया। इसके बाद कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ0 हरीमोहन पुरवार जी को महाविद्यालय पुस्तकालय प्रभारी] डॉ0 हृदयकान्त श्रीवास्तव जी ने] मुख्य अतिथि श्री मुकुल कानिटकर जी को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय जी ने] विशिष्ट अतिथि डॉ0 रंजन कुमार त्रिपाठी] डॉ0 सुरेश चन्द्र पाण्डेय] डॉ0 राम सुधार सिंह जी को क्रमशः महाविद्यालय के प्राध्यापक डॉ0 रामप्रताप सिंह] डॉ0 परमात्मा शरण गुप्ता] डॉ0 आनन्द कुमार खरे एवं महाविद्यालय के अवैतनिक मंत्री डॉ0 देवेन्द्र कुमार जी को प्राचार्य जी द्वारा तथा संगोष्ठी संरक्षक डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव जी को मनोविज्ञान विभाग प्रभारी डॉ0 तारेश भाटिया ने स्मृति भंेट प्रदान कर सम्मानित किया। इस दो दिवसीय संगोष्ठी का विशेष आकर्षण डॉ0 संध्या पुरवार द्वारा बनाए गए सांस्कृतिक चित्रों की प्रदर्शनी रही। डॉ0 संध्या पुरवार ने भारतीय संस्कृति के विभिन्न पर्वों/ऋतुओं और दृश्यों को अपनी पेंटिग्स में बहुत ही खूबसूरती के साथ समायोजित किया। देशभर से आए हुए विद्वानों] अतिथियों] शोधार्थियों ने इस चित्र प्रदर्शनी को खूब सराहा और इस विशेष आकर्षण की प्रशंसा की। जिसके लिए संगोष्ठी के समापन के अवसर पर डॉ0 संध्या पुरवार जी को महाविद्यालय की प्राध्यापिका डॉ0 शैलजा गुप्ता एवं मंजू जौहरी जी द्वारा उन्हें स्मृति भेंट प्रदान कर सम्मानित किया। प्राचार्य डॉ0 राजेश चन्द्र पाण्डेय जी ने सभी को आभार प्रगट कर कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम के अन्त मंे सभी के द्वारा राष्ट्रगान कर दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी के समापन की घोषणा की गई।